ISSN 2394- 5303

Printing Area®

Issue-68, Vol-01 September 2020
Peer Reviewed International Refereed Research Journal

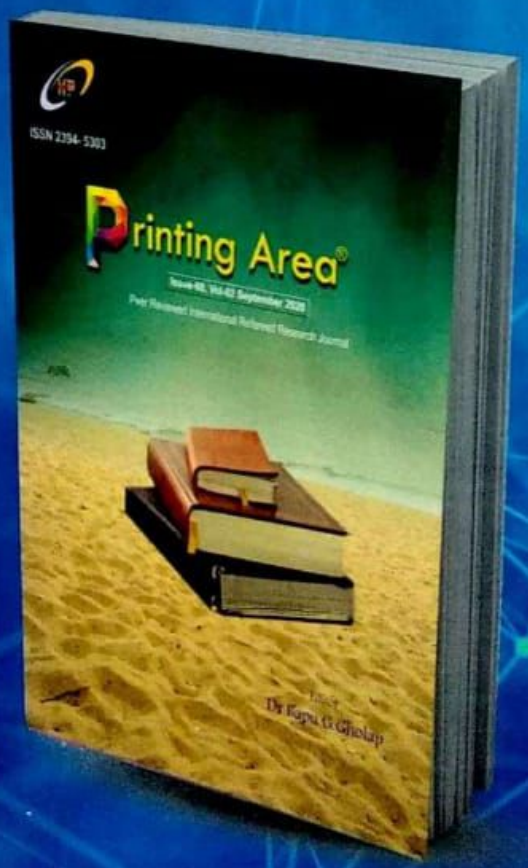

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

INDEX

01) Covid-19 and Indian Economy
Aiman Khatoon ||12

02) Reflection of Vastu Element in Kamasastra Theory
Dr. Rahul Vishwas Altekar & Dr. Gauri Mahulikar, Mumbai ||15

03) ONE NEW CESTODE OF GENUS SENGA DOLLFUS 1934 FROM FRESH WATER FISH ...
V. K. GARAD, WASHI (M. S.) INDIA ||20

04) Rule of Law under the Constitution of India
Gurudev Sahil, Bhagalpur University ||23

05) Gujarat Ayurved University- Prospective World Class University
Dr. Ajaysinh K. Jadeja, Jamnagar ||29

06) Effect of carbon sources on the growth and sporulation of five species of ...
P. S. Kaste, Distt.Amravati (M.S.) ||34

07) A NORMATIVE STUDY ON MUSCULAR STRENGTH OF STUDENTS FROM TRIBAL AREA
Sanjay Janardan Murkute & Dr. Maheshchand Sharma, Dist. Chandrapur ||38

08) Challenges & Strategies in Making $ 5 trillion economy Sub. theme – ...
Dr. Alka Nayak, Orai ||41

09) A Study on Employees' Perception Regarding Effectiveness of Internal ...
Dr. Pradeep Kumar, Shahjahanpur ||46

10) Women's Empowerment through Skill Development
Dr. Shankar Laxman Sawargaonkar, Dist.Beed ||53

11) Amazing Indian Women's Freedom Fighters
Dr. Nivedita Swami, Dist: Kalaburgi ||56

12) CONSUMER SATISFACTION CONCERNING PERFORMANCE OF HDFC AND LIC ...
SHASHIMALA KUMARI, Bhagalpur, Bihar ||59

13) IMPACT OF EDUCATION ON THE SIN OF "FEMALE FOETICIDE"
Shradha Samadhiya & Dr. D. C. Upadhyaye, Bhopal (M.P.) ||66

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

14) आजच्या शैक्षणिक पटधतीमध्ये शारीरिक शिक्षणाची आवश्यकता
डॉ. सुरेश जयराम फराकटे, कोल्हापूर ||69

15) रॉयचे नित्य समीकरण, शेफर्डचे सहायक प्रमेय आणि उपभोगातील अन्योन्यता: ...
प्रा. बेलुरे विशाल चंद्रशेखर, जिल्हा नादेड ||71

16) मराठी पत्रात्मक वाङ्मयाचे स्वरूप : एक आकलन
प्रा. राजेंद्र जयराम खंदारे, जि.सोलापूर ||73

17) स्वातंत्र्यपुर्व कालीन दलित चळवळ आणि चंद्रपूर जिल्हा
प्रा. डॉ. आर. पी. किरमिरे, जिल्हा– गडचिरोली ||76

18) "होय, तेव्हाही गाणं असेल !" अनुवादित कवितासंग्रहाचे तुलनात्मक आकलन
प्रा. डॉ. निलेश एकनाथ लोंढे, परभणी ||82

19) महानुभाव पंथाची शिकवण : एक अभ्यास
प्रा.डॉ. प्रकाश फड, परळी वै. ||87

20) भारतीय खेळ काल आणि आज
डॉ. सुशांत तानाजी मगदूम, सोळांकूर ||90

21) गूळ उत्पादन पद्धती आणि गूळ विपणनाच्या समस्या
विनोद दाजीराम रणपिसे & डॉ. एन. बी. शेख, पुणे ||92

22) भारताच्या आर्थिक विकासात परकीय व्यापाराचे महत्व
प्रा. डॉ. टी.जी. सिराळ, जि. हिंगोली ||97

23) युगल साहित्यकार ममता कालिया तथा रवीन्द्र कालिया के कहानियों में चित्रित वृद्धावस्था
गोपिरेड्डी लीलावती, वरंगल, तेलंगाना ||100

24) मध्य हिमालय (उत्तराखण्ड) में दुर्गों का इतिहास
डॉ. राजा हृदयेश अण्डोला ||104

25) भरतपुर जिले के स्थान–नामों का भाषा शास्त्रीय अध्ययन
डॉ. गोविन्द शंकर शर्मा & डॉ. अशोक कुमार शर्मा, जयपुर (राज.) ||110

26) वर्तमान में कबीर काव्य की प्रासंगिकता
डॉ. रेनू जोशी, अल्मोडा ||114

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.387(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | September 2020 Issue-69, Vol-01

23

युगल साहित्यकार ममता कालिया तथा रवीन्द्र कालिया के कहानियों में चित्रित वृद्धावस्था

गोपिरेड्डी लीलावती
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
काकतीय शासकीय महाविद्यालय, वरंगल, तेलंगाना

****

वृद्ध का शाब्दिक अर्थ है - बढ़ा हुआ, पका हुआ, परिपक्व । वृद्धावस्था या बुढ़ापा जीवन की उस अवस्था को कहते हैं जिसमें उम्र, मानव जीवन की औसत काल के समीप या उससे अधिक हो जाती है। वृद्ध लोगों को रोग लगने की अधिक संभावना होता है। उनकी समस्याएं भी अलग होती है। वृद्धावस्था धीरे-धीरे आने वाली अवस्था है, जो कि स्वाभाविक व प्राकृतिक घटना है। भारतीय परंपरा में वृद्धों की बातों को सम्मान देने का साथ ही उनके निर्णय के विरुद्ध नहीं जाने का एक रिवाज़ रहा है।

वृद्धों को अनेक समस्याएँ घेर लेती है, परिणामतः वे दूसरों के साथ संबंध स्थापित करने में असमर्थ रहते हैं। वृद्धों की समस्याओं को हम इस प्रकार कह सकते हैं - शारीरिक, मानसिक, स्वास्थ्य की समस्या, आर्थिक समस्या, पारिवारिक एवं सामाजिक समस्या, अकेलापन की समस्या, घर व समाज में अनादर, अन्यश्रित भावना की समस्या आदि-इत्यादि। इन वृद्धों के समस्याओं के कारणों को डॉ. रमेश प्रसाद द्विवेदी ने स्पष्ट करते हुए लिखा है संयुक्त परिवार का विघटन, भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धि, नई-पुरानी पीढ़ी के बीच फासला, धन का महत्व तथा व्यक्तिवादिता या व्यक्तिगत स्वार्थ।[1] इसके साथ-साथ सत्यशील अग्रवाल वृद्धों के समस्याओं के कारणों को बताते हुए १. सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन, २. बढ़ता भौतिकवाद, ३. पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव, ४. चिकित्सा सुविधाओं का महंगा होना, ५. सामाजिक सुरक्षा का अभाव, ६. विषम परिस्थितियों के शिकार बुजुर्ग, ७. नशीली आदतें।[2] लिखे हैं।

वृद्धावस्था अथवा वरिष्ठ नागरिकों के समस्याओं को युगल साहित्यकार ममता कालिया एवं रवीन्द्र कालिया जी के कहानी साहित्य में चित्रण किया गया है।

वृद्धों की उपेक्षा

भारत जैसे देश में वृद्धों की या बुजुर्गों की उपेक्षा क्यों बढ़ रही है? इसका कारण हम दैहिक, पारिवारिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक कारण कह सकते हैं साथ ही उसका हस्तांतरण भी, क्योंकि घर के अंदर सास का साम्राज्य और घर के बाहर पिता का। किंतु बहू के गृहप्रवेश से सास के अधिकारों में हिस्सेदारी की मांग बढ़ती है। धीरे-धीरे परिवार में बहू की प्रमुख्यता ने घर के अंदर सत्ता का हस्तांतरण कर लेती है तो घर के बाहर सभी तरह के निर्णयों में पुत्रों के हस्तक्षेप से पिता की सत्ता कम होती है। उम्र ढलने के कारण शारीरिक तौर से, कल तक जो व्यक्ति चुस्त दिखता था, आज वह निरूपाय-सा, सुस्त नज़र आते हैं साथ ही शरीर, मन का साथ नहीं दे पाता। परिणाम स्वरप देह की क्षमता का रूपांतरण भी बहू व बेटे में हो चुका होता है।

रवीन्द्र जी बुढ़वा मंगल कहानी में नब्बे साल के बूढ़े के प्रति उनके बेटे और पोते उपेक्षित दृष्टि से देखते हैं, उनसे बातें करने के लिए भी समय नहीं होता है बच्चे तक उसके कमरे की तरफ रुख न करते थे। बूढ़े ने निराश होकर परिन्दों से दोस्ती कर ली थी। ... शुरु-शुरु में बच्चे टॉफी लेने उसके कमरे में जाया करते थे, मगर अब वे बड़े हो गए थे और बूढ़े की टॉफी में किसी की uÂYEog CEsy@ जो अकेलापन से ग्रस्त है। ममता जी ने सीट नंबर छह कहानी में बंगालिन (बहू) अपनी सास के पास अपने बेटे (पोते) को छोड़ना नहीं चाहती है जो कोलकत्ता में रहती हैं। मेरी माँ ने हमारा बेटा अपने पास रख लिया। उधर वह एकदम अकेली है, पहले हमारे पास रहती थी पर इन दोनों की एकदम नहीं बनती। उधर पास में स्कूल भी है। हमने सोचा एक दो साल माँ रख ले तो क्या, पर ये तब से रोती ही रोती है। उधर रहने भी नहीं दिया, लड़ कर आ गई।[4] ममता जी की खाली होता हुआ घर कहानी की नायिका सुमित्रा अपने माता-पिता को छोड़कर और उपेक्षा कर, वह प्रेम विवाह करके कुछ दिनों के पश्चात् माँ-बाप से मिलने आती है तो माँ बीमार पड़ती है और पिता घर के काम करते हुए, उससे कहते हैं रहने दो, दो दिन से फायदा... और बिगाड़ कर चली जाएगी। रिटायरमेंट और बुढ़ौती, दोनों की तैयारी कर रहा हूँ।[5]

ममता जी की आज़ादी कहानी की दादी, अपने पति (बाबा), उनको फोड़ा-फुंसी निकलती है तो वह आंगन के नीम की पत्तियाँ पीस कर उस पर बाँधती हैं क्योंकि उनके पति उन्हें डॉक्टर के पास दिखाना, पैसे व्यर्थ करना समझते हैं। वे अपने ही पति द्वारा उपेक्षित हैं अच्छे डागडर की फीस भी अच्छी होगी का फायदा? तुम्हें कौन ब्याह रचाना है। मर्ज और क़र्ज समय पाकर जाते हैं,

Scanned with CamScanner

बच्चू की माँ। डागडरन की चीड़-फाड़ से तो या जनम भी खराब, वह जनम भी खराब।[६]

सेवा कहानी में सेवानिवृत्त नरोत्तम सहाय की पत्नी को ब्रेन हैमरेज के कारण कोमा की स्थिति में अस्पताल में शरीख किया जाता है, उनकी दोनों बेटियाँ जो विवाहित हैं, आकर दो दिन रहती हैं और जाने के लिए पिता से कहकर चली जाती हैं। तो उनके एकलौते बेटे विस्मय व बहू डाली दो दिन के बाद आकर घंटा भर रुकते हैं और जाते-जाते अपने पिता से कहते हैं पापा आप सुबह शाम मुझे ममी की हालत के बारे में फोन करते रहिए। आय मस्ट नो हाऊ शी इज। मुझे कलकत्ते जाना था मीटिंग से वह मैं पोस्टपोन कर दूंगा।

डॉली ने कहा, पापा आप अपनी भी ध्यान रखिएगा। यह न हो कि ममी के बाद आप पड़ जाएँ।[७] जो रिश्तों में भौतिकवाद का परिचायक है, और अपने ही माँ-बाप को उपेक्षित रखे हैं।

तासीर कहानी में मिश्रा बाबू की बहू, उनकी बात बिल्कुल नहीं मानती है। अब तो बेटी छोड़ बहू भी मनमर्जी कर लेती है और आप कुछ नहीं कर सकते।.... वे अगर आलू बैंगन बनाने को कहते, वह मूली बैंगन बना देती बिना यह सोचे कि मूली उन्हें बाय करती है।[८]

मान लो कि कहानी में बूढ़ा व्यक्ति नायिका को अपनी मृत बेटी मुन्नी समझता है और वह हर शाम बगीचे में उससे मिलने आता है। वह अपनी बेटी और बहुओं की तुलना करते हुए कहता है इसी तरह आ बैठती थी मेरे साथ ८.४० की खबरें सुनने। कितने लाड़ से मेरी डपट सुनती थी। सुनो, तुम्हारी भाभियां तुम्हारी जैसी क्यों नहीं बनती। नाटक ही सही, करें तो एक दिन।[९]

ममता जी ने दिल्ली कहानी में वृद्धों की प्रति सामाजिक उपेक्षा को दर्शाया है- अनुराग और समिधा उत्तर भारत यात्रा करने के लिए पहले दिल्ली पहुंचते हैं, वहाँ वरिष्ठ दंपत्ति रेल यात्री-भवन में जाते हैं तो वहाँ उन्हें कर्मचारी आदर भाव से पेश नहीं आते हैं सहायक ने बेफिक्री से कहा, शिकायत-पुस्तिका नीचे है, जाइए।[१०] जो मानवता पर एक धब्बा है।

रवीन्द्र जी चकैया नीम कहानी में शिवलाल जो अपनी बूढ़ी माँ को अपने स्वार्थपूर्ति के लिए अपने भाई के घर से लेकर आता है और अपना कार्य संपन्न होने के पश्चात् उसे वापस भेज देता है। जो निरी भौतिकवाद का परिचायक है। गुलाब देई के पांव भारी हो गए। शिवलाल भागा-भागा अपने छोटे भाई के यहाँ से माँ को बुला लाया। अब माँ आटा पीसती और शिवलाल बाहर सड़क पर खाटेपा डाले हुक्का गुड़गुड़ाता रहता। जब तक गुलाब देई चालीसवां नहाती, शिवलाल ने माँ को दुत्कार कर निकाल दिया।[११]

उपरोक्त कथनों से स्पष्ट है कि ममता कालिया एवं रवीन्द्र कालिया के कहानी साहित्य में वृद्ध चाहे स्त्री हों या पुरुष, वे अपने ही पति या पत्नी से अथवा बेटे या बहू से उपेक्षित रहे हैं। रवीन्द्र जी की कहानियों में माता-पिता उपेक्षित हैं तो ममता जी कहानी साहित्य में सीट नंबर छह, सेवा, तासीर, मान लो कि आदि में बहू से उपेक्षित हैं तो आज़ादी कहानी में पति से तथा दिल्ली कहानी में सामाजिक तौर पर उपेक्षित वृद्ध पात्र हैं।

इसमें दो राय नहीं कि वृद्धों की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। वृद्धों का भरपूर सम्मान होना चाहिए। जिस समाज, बुजुर्गों का सम्मान नहीं कर पाते हैं, उससे दूषित और घृणित समाज की कल्पना करना भी दुष्कर है। वृद्धों की चिंताएँ, उनकी समस्याओं को और उनकी सरोकार पर गंभीरता से विचार करनी चाहिए। एकल परिवार के कारण जिस प्रकार उनकी संसार सिकुड़ी-सिमटी हो जा रही है, वृद्धों के लिए विकल्प की तलाश की जानी चाहिए, ताकि बच्चे दादा-दादी और नाना-नानी के प्यार को अनुभव कर सकें और उनके द्वारा कहानियाँ सुनें, साथ ही उनके अनुभव-सार को नयी पीढ़ी ग्रहण कर सकें।

पुरानी पीढ़ी तथा नयी पीढ़ी का अंतराल

दो व्यक्ति, जिनका अलग अलग समय में जन्म हुआ हो और एक दूसरे के व्यवहार अलग हो, सोचने का तरीका अलग हो, उसे पीढ़ी अंतराल कहते हैं। यानीकि जब दो पीढ़ीयों में अंतर हो जाता है तो हम उसे पीढ़ी अंतराल या फिर जनरेशन गैप कहते हैं। समय परिवर्तन के साथ साथ लोगों के जीवन शैली, विचारधारा, व्यावहारिकता, भाषा शैली, आस-विश्वास में भी बदलाव आता है, जिससे वे एक-दूसरे से अलग पहचान बनाते हैं। जैसे कि - माँ-बाप और उनके संतान या सास-ससुर और बहू - दामाद के बीच अंतराल है। क्योंकि, इनकी विभिन्न राय होती है और इसी कारण से उनमें अक्सर टकराव होता है। विभिन्न लोगों के विचार मेल नहीं खाते हैं, हालांकि दोनों अलग व्यक्ति, अपने हिसाब से सही होते हैं किंतु समय परिवर्तन के हिसाब से पहले जन्में लोग (पुरानी पीढ़ी) स्वयं को व्यवस्थित नहीं कर पाते हैं और इसी कारण से हाल ही में जन्में लोग (युवा पीढ़ी) से उनके विचार मेल नहीं खाते हैं। परिणामतः टकराव होता है। जिसका प्रभाव माता-पिता और संतान अथवा अन्य सदस्य के रिश्ते पर पड़ता है।

भारत में पहले संयुक्त परिवार की संस्कृति थी, जिसमें एक से अधिक परिवार मिलकर रहते थे। किन्तु आजकल लोगों की धारणाएँ बदल गयी हैं और सब सभी निजता चाहने लगे हैं,

परिणामस्वरूप अधिकतर लोग एकल परिवार के रूप में रहने के लिए इच्छुक हो रहे हैं, और तो और यहाँ तक कि संतान अपने मां-बाप के साथ भी रहना पसंद नहीं कर रही हैं।

इन्हीं दो पीढ़ियों के सोच की टकराहट तथा बुजुर्गों के प्रति नयी पीढ़ी का रवैये को युगल साहित्यकार ममता कालिया तथा रवीन्द्र कालिया ने अपने कहानी साहित्य में लिपिबद्ध किया है, जिसकी हम आगे चर्चा करेंगे -

ममता जी की गुस्सा कहानी की माँ माया, जीवन में मात्र पैसों को ही एहमियत देती हैं, उनके लिए वह अपने पति और संतान से झगड़े करती हैं और उसकी गुस्से के शिकार होकर पति घर छोड़कर चले जाते हैं। जब उसके बेटों को मालूम पड़ता है तब वे आकर पिता को ढूंढ़ते हैं तो पिता का पता नहीं लगा सकते हैं, तो अपनी माँ से वे कहते हैं रहने दो अम्मा, हम क्या तुम्हें जानते नहीं हैं? तुम तो जुबान से चाबुक का काम लेती हो।... जाते-जाते उसके हाथ में कुछ रुपये ठूंस दिए और कह गए कि हर महीने वे कुछ न कुछ भेजते रहेंगे।[१३] पति और संतान के जाते ही पैसा उसके लिए व्यर्थ हो गया था।

ममता जी की लड़के कहानी में पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के अंतराल को हम देख सकते हैं, जैसे अम्मा, सुबह उठकर नाश्ता तैयार कर देती थीं। पिताजी से किताब-कापी के नाम पर नामा भी मिल जाता था। पढ़ चुके तो यह उम्मीद भी गोल। घर भर के लिए एक फख्र का विषय था कि लड़का कॉलेज जाता है।[१४] किंतु बेटे को तो कॉलेज जाना मात्र समय बिताना है और कॉलेज में हड़ताल करना और पीरियड गोल करने का वह आदी था। साथ ही वह कहा करता है पढ़कर, निकलने की जल्दी भी किसे थी, जो निकले थे वे भी रो रहे थे, जो नहीं निकले वे भी। फिलहाल पढ़ाई एक तगड़ा बहाना था।[१५]

ममता जी की 'खाली होता हुआ घर' कहानी के माध्यम से आज की युवा पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी का अंतराल को दर्शाते हुए पिता अपने एकलौती बेटी सुमित्रा को न सही यूनिवर्सिटी कैरियर, वे उसे फ्रेंच का डिप्लोमा करा देंगे, या एयर होस्टेस बनवा देंगे या और कुछ नहीं तो आइकेबेना की कलाकार हो जाएगी।[१६] जैसी प्रणाली का ख्याल करता है साथ ही वे महत्वाकांक्षी भी। किंतु सुमित्रा बी.एड. में फेल होती है और लायब्रेरी साईंस के कोर्स में भी उसे दाखिला ना मिलता है तो वह अपने माँ-बाप को छोड़कर एक नया मुकाम ढूंढ़ लेती है दिल्ली की एक गिचपिच कालोनी में एक सी क्लास क्वार्टर था, एक अदद लड़का था और पांच सौ रुपए मासिक आय। लड़के के अलावा कोई चीज़ धड़ल्ले की नहीं थी सब निहायत औसत। इसी औसत की शायद उसे तलाश थी।[१७] आजकल अभिभावक अपने बच्चों पर अपनी इच्छाओं को और अपने आशा व सपनों को हासिल करने का जरिया बना रहे हैं। इसी प्रकार ममता जी आपकी छोटी लड़की, तोहमत, लड़कियाँ, बिटिया, नयी दुनिया कवि मोहन आदि कहानियों में पुरानी पीढ़ी तथा नयी पीढ़ी की सोच की टकराहट को चित्रित किया है।

ममता जी की नायक कहानी में अमित अपने साम्यवाद विचारधारा को उसके वकील पिता को आवेश और विरक्त भाव से कहता है आप कचहरी में रात-दिन सच को झूठ और झूठ को सच बनाते हैं, आपकी सारी प्रैक्टिस झूठ और मक्कारी पर टिकी है और बात आप मेरे रवैये की करते हैं। मैं कहता हूँ आप बेईमान हैं, शोषक हैं।[१७] इसी प्रकार 'प्रतिप्रश्न' कहानी की महिमा के पिता उसके लिए पारंपरिक विवाह कराने के लिए एक वर को ढूंढ़ता है तो महिमा ने पिता से कई शंकाएँ थीं और पिता से वह सवाल करती है लड़का बत्तीस साल तक अविवाहित क्यों है। सर्विस कच्ची है या पक्की, प्रमोशन की गुंजाइश कितनी है, इसकी माँ-बहनें झगड़ालू तो नहीं हैं।[१८]

उड़ान कहानी में माँ और पिता की समझ में नहीं आता है कि बेटे के विचारों से वे खुश हों या फिर दुखी। माँ-बेटे के बातचीत को देखिए - साकू यह घर का पहला स्कूटर है, तेरे पापा ने जन्म बिता दिया मोपेड़ पर चलते। तेरे स्कूटर के लिए इनकी सिगरेट, दारू सब छूट गई रे।

अच्छा हुआ माँ, ये तो खराब आदतें थीं। समझ लो कि इनकी उम्र के दस साल और बढ़ गए।[१९] माता-पिता अपनी संतान के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देते हैं ताकि वे सुख से उच्च पदों पर रहें, किंतु बच्चे, माँ-बाप के परिश्रम और त्याग को तुच्छ समझते हैं, जो बहुत ही दर्दनाक है। इसी प्रकार ममता जी की छिर कुमारी, उत्तर अनुराग, ऐसी ही था वह आदि कहानियों में हमें उदाहरण मिलते हैं तो बच्चा कहानी के माध्यम से उन्होंने बेटे के द्वारा बुरी आदतों से ग्रस्त माँ-बाप को सही रास्ते पर लाने का प्रयास भी सफलतापूर्वक किया है।

रवीन्द्र कालिया जी ने 'त्रास' कहानी के माध्यम से माता-पिता और नायक के बीच के रवैया को अंकित किया है। वृद्ध माता-पिता अपने बेटे से मिलने के लिए गांव से उसके शहर आते हैं और अपनी जिज्ञासा पूर्ति के लिए शाम को बेटे की राह देखते रहते हैं। कई बार माँ-बाप की जिज्ञासाओं को पुत्र अपने जीवन में दखल देने के रूप में लेता है। क्योंकि उसे सिगरेट, शराब आदि आदतें पड़ चुकी थी और सब चीज़ें वह छुपाकर रखता है किंतु माँ ने बोतलें

देखीं तो चौंकी नहीं... वे बोतलें तुम्हारी नहीं? तुम्हारी पापा ने देखी तो बहुत उदास हो गए। वह वापिस चलने के लिए कह रहे थे। वे मामूली-मामूली बातों को लेकर परेशान हो जाते हैं।[२०] नायक अपने पिता के सामने सिगरेट का विज्ञापन तक नहीं पढ़ता और भेड़ियों पर भी सिगरेट का विज्ञापन आता है तो वह स्टेशन बदल देता है। पिता और नायक के बीच बातचीत का ज़रिया उसकी माँ ही बनती है। इस प्रकार के रिश्ते हमारे आस-पास भी नज़र आते हैं।

रवीन्द्र जी ने नौ साल छोटी पत्नी कहानी में कुशल जो अपनी पत्नी तृप्ता से नौ साल बड़ा है, और उन दोनों के सोच के अंतराल को कहानी के माध्यम से दर्शाया है। कुशल और तृप्ता के बीच के संवाद को देखिए इस पहली को एक नयी खाट ले आऊँगा।

तृप्ता को सुझाव बड़ा फिजूल लगा, बोली, मैं तो बहुत कम जगह घेरती हूँ।

कई बातें अभी तुम्हारी समझ में नहीं आ सकती। तुम अभी बच्ची हो।... कई बार तो तुम्हारे मुंह से दूध की बू भी आती है।[२१]

वृद्ध अपने-अपने पुराने मूल्य व संस्कार, धारणाओं में बंधे होने के कारण नए धारणाओं को नापसंद करते हैं। पुराने मूल्य में जीने की आदत हो जाने के कारण वे नए मूल्य और नई जीवन शैली से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते हैं। युवा अपने विचार, पुरानी पीढ़ी को समझाना नहीं चाहता और पुरानी पीढ़ी, युवा को अपना विचार समझाना तो चाहती है, किंतु युवा समझना नहीं चाहता। उसके पास समझने के लिए ना ही समय होता है और न ही सहनशीलता। पीढी अंतराल को जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता है, लेकिन यदि माँ-बाप और बच्चे या परिवार के अन्य सदस्य आपस में अपने विचार-विमर्श रखें और सही-गलत का फैसला मिलकर करें तो अंतर से होने वाले टकराव को बहुत हद तकक कम किया जा सकता है। ममता जी तथा रवीन्द्र जी ने अपनी कहानी साहित्य में इस अंतराल को प्रस्तुत करके हमें सोचने पर मजबूर किया है।

वृद्धों की बदौलत युवाओं का आचरण अनुशासित हो जाता है, यह निर्विवाद है। क्योंकि वृद्ध कई बार नयी पीढ़ी, अराजक होने तथा राह भटकने से बचा लेती है। हम अपनी संस्कृति व परंपराओं को गतिशील और ऊर्जावान बनाने के लिए वृद्धों को ससम्मान बचाकर रखना नयी पीढ़ी की जिम्मेदारी है। ताकि समाज में किसी अनाथ वृद्धाश्रम न खुले। वृद्ध विहीन समाज या परिवार निश्चित रूप से असंतुलित परिवार या समाज होगा। अंततः वृद्धावस्था के महत्व को पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने इस प्रकार लिखा है वृद्धावस्था का सच्चा आनन्द है आत्म-संतोष। जिन्हें भविष्य की चिंता है, वे वृद्ध नहीं हैं। वे तरूण ही हैं क्योंकि उन्हें कार्यों की ओर चिंता अवश्य प्रेरित करेगी। जो देश के भविष्य निर्माण में व्यस्त हैं, उन्हें आत्म-संतोष तभी होगा जब वे अपना कार्य समाप्त कर लेंगे और तभी वे वृद्ध होकर अपने अतीत जीवन का स्मरण करेंगे। तब उनके लिए भविष्य की कोई चिंता नहीं रह जाएगी।[२२]

संदर्भ सूची :

१. वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं के कारण, समस्याएँ एवं समाधान https://www.pravakta.com

२. सत्यशील अग्रवाल, वृद्धावस्था की समस्या - गद्य कोश https://www.gadyakosh.org

३. बुढवा मंगल - रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ - रवीन्द्र कालिया, पृ. ३८२-३८३

४. सीट नंबर छह - ममता कालिया की कहानियाँ, खंड १, ममता कालिया, पृ. ११६-११७

५. खाली होता हुआ घर - ममता कालिया कहानियाँ, खंड १, ममता कालिया, पृ. २२३

६. आज़ादी - ममता कालिया कहानियाँ, खंड १, ममता कालिया, पृ. १९१

७. सेवा - ममता कालिया कहानियाँ, खंड १, ममता कालिया, पृ. १७९

८. तासीर - ममता कालिया कहानियाँ, खंड १, ममता कालिया, पृ. १८१-१८२

९. मान लो कि - ममता कालिया कहानियाँ, खंड १, ममता कालिया, पृ. २६२

१०. दल्ली - ममता कालिया कहानियाँ, खंड १, ममता कालिया, पृ. ३७४

११. चकैया नीम - रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ - रवीन्द्र कालिया, पृ. २८८

१२. गुस्सा - ममता कालिया कहानियाँ, खंड १, ममता कालिया, पृ. १५६

१३. लड़के - ममता कालिया कहानियाँ, खंड १, ममता कालिया, पृ. १९९

१४. लड़के - ममता कालिया कहानियाँ, खंड १, ममता कालिया, पृ. १९९

१५. खाली होता हुआ घर - ममता कालिया कहानियाँ,